SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्वालियर के सिंधिया शासकों की प्रशासन व्यवस्था

सरिता सिंह, इतिहास विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
सरिता सिंह, इतिहास विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/02/2020
Revised on : -----
Accepted on : 20/02/2020
Plagiarism : 00% on 15/02/2020

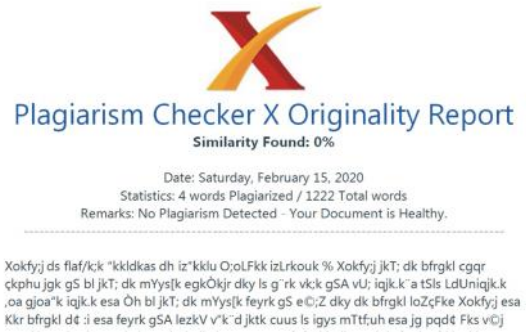
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Saturday, February 15, 2020
Statistics: 4 words Plagiarized / 1222 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

Xokfy;j ds flaf/k;k "kkldkas dh iz"kklu O;oLFkk izLrkouk % Xokfy;j jkT; dk bfrgkl cgqr ckphu jgk gS bl jkT; dk mYys[k egkÖkjr dky ls g"rk vk;k gSA vU; iqjk.k"a tSls LdUniqjk.k ,oa gjoa"k iqjk.k esa Öh bl jkT; dk mYys[k feyrk gS e©;Z dky dk bfrgkl loZçFke Xokfy;j esa Kkr bfrgkl d¢ :i esa feyrk gSA lezkV v"k"d jktk cuus ls igys mTtf;uh esa jg pqd¢ Fks v©j

प्रस्तावना :–

ग्वालियर राज्य का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है इस राज्य का उल्लेख महाभारत काल से होता आया है। अन्य पुराणों जैसे स्कन्दपुराण एवं हरवंश पुराण में भी इस राज्य का उल्लेख मिलता है, मौर्य काल का इतिहास सर्वप्रथम ग्वालियर में ज्ञात इतिहास के रूप में मिलता है। सम्राट अशोक राजा बनने से पहले उज्जयिनी में रह चुके थे और बौद्ध धर्म को मानने वाली देवी के साथ उन्होंने विदिशा की देवी से विवाह किया था। विदिशा में बौद्ध स्तूप की कुछ अंश प्राप्त हुए हैं तथा अशोक का एक स्तूप उज्जैन से भी प्राप्त हुआ है। ग्वालियर में धनेल ग्राम में मौर्य कालीन दुर्ग के अवशेष भी मिले हैं। अशोक का शासन काल 274 ईसा पूर्व से 232 ईसा पूर्व तक रहा। अशोक के शासन काल के बाद फिर उतना शक्तिशाली राज्य नहीं हुआ और धीरे–धीरे जो लगभग दो सदी से शासन करते चले आ रहे मौर्य साम्राज्य का पतन होने लगा। अंतिम मौर्य शासक ब्रहद्रथ मौर्य इनका शासन काल 191 से 184 ईसा पूर्व रहा था इनकी हत्या उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी (185 ईसा पूर्व) तथा ग्वालियर राज्य शुंग वंश के अधीन चला गया। पुष्यमित्र शुंग ने विदिशा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया जो उस समय ग्वालियर राज्य के अंतर्गत आती थी।

औरंगजेब के काल में इस घराने के लोगों ने काफी तरक्की की और औरंगजेब ने उन्हें मनसबदारी प्रदान की। जब मराठों ने स्वतंत्रता के लिए मुगलों से संघर्ष किया तो सिंधिया परिवार के नेमाजी सिधिया भी उन युद्धों में शामिल हुए। अपितु विजय भी प्राप्त की। उन्होंने मुगलों के अधीन मालवा पर भी आक्रमण किया और उनकी गणना शक्तिवान मराठा सरदारों से होने लगी। सम्भाजी के पुत्र साहू जी जो औरंगजेब के यहाँ नजरबन्द थे उनके दो

विवाह हुये थे जो औरंगजेब ने ही कराए थे, उनमें से एक कन्हेर खेड़ा के पटेल परिवार की सिधिया वंश की बेटी थी।

मुख्य शब्द :–

ग्वालियर, सिंधिया एवं प्रशासन व्यवस्था

ग्वालियर भारत के मध्यप्रदेश प्रान्त का एक प्रमुख शहर है। भौगोलिक दृष्टि से ग्वालियर मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर में स्थित है। ग्वालियर का क्षेत्रफल 2,013 वर्ग मील है तथा घनत्व 1,153 वर्ग मील है। ग्वालियर में जलवायु गर्म और शीतोष्ण है यहाँ सर्दियों में गर्मियों से अधिक वर्षा होती है। ग्वालियर का औसत वार्षिक तापमान 25.7^{O}C है साल में 910 मिमी. तेजी से वर्षा होती है। अप्रैल 2 मिमी के साथ सबसे शुष्क माह है और 301 मिमी औसत के साथ सबसे तेजी अगस्त में होती है।

ग्वालियर राज्य अपनी भौगोलिक एवं ऐतिहासिक महत्व के साथ प्राचीन ऐतिहासिक परम्पराओं स्थापत्य भव्य नक्काशी किलों एवं महलों के लिए प्रसिद्व रहा है। सिंधिया वस्तुतः यहाँ के मूल निवासी नही थे अपने पेशवाओं की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वे सेनापति की हैसियत से वे उत्तर भारत की ओर अग्रसर हुये अन्य क्षेत्रों के साथ साथ उन्होने ग्वालियर क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया जब सेनापति दोबारा महाराष्ट्र लौटने को बाध्य हुये तो उन्होंने अपने अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर ली इसी तहत ग्वालियर में भी सिंधिया राज्यवंश की स्थापना हुई।

सिंधिया राजवंश ने अपने दो सौ साल के शासन में अनेक उतार चढ़ावों का सामना किया। सिंधिया कालीन राज्य की सामाजिक संगठन की विभिन्न निर्णायक इकाईयों में परस्पर प्रेकार्यात्मक सम्बन्ध सुस्पष्ट दिखाई देते है। तत्कालीन ग्वालियर राज्य को संगठित समाज कहा जाता था।

ग्वालियर राज्य की प्रशासन व्यवस्था को समझने के लिए हमें मराठों की प्रशासन व्यवस्था को समझना होगा। ग्वालियर राज्य जहाँ सामाजिक दृष्टि से सुसंगठित एवं परम्परावादी राज्य था वही आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं राजस्व सम्पन्न राज्य रहा है। आर्थिक आधार पर राज्य का समाज वर्गो में विभाजित था। राज्य की राजस्व व्यवस्था पूर्ण रूप से परम्परावादी थी। ग्वालियर राज्य का राजनैतिक स्वरूप अत्यन्त विकसित था ग्वालियर राज्य की भौगोलिक स्थिति राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। राज्य में न्याय प्रशासन व्यवस्था समानान्तर रूप से विकसित हुई सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि ग्वालियर राज्य की शाब्दिक एवं व्यवहारिक रूप से स्थापना इस काल में हुई थी। हाँलाकि ग्वालियर एक स्वतन्त्र राज्य था फिर भी उस पर कई दबाब थे।[3] राज्य की प्रशासन व्यवस्था कई भागों में बटी हुई थी केन्द्रीय प्रशासन राजा के अधीन मंत्रीपरिषद यहाँ के कार्य देखता था ग्वालियर राज्य की शासन व्यवस्था के प्रमुख अधिकारियों के पद एवं नाम भी मराठा प्रशासन के समान रखे गये थे। नाम फारसी शब्दों के समान ही थे। ग्वालियर राज्य का प्रधान मंत्री जो कि दीवान कहलाता था, सभी विभागो का प्रमुख होता था तथा सभी विभागों पर नियंत्रण रखता था। प्रमुख दीवानी अधिकारी फड़नवीस था। फड़नवीस शब्द फारसी शब्द फर्द नदीम में से लिया गया है।

राज्य की पूरी राजस्व व्यवस्था का बजट बनाना अपेक्षित आय का लेखा जोखा तैयार करना पूरी राज्य की आय बढ़ाने के लिए नये श्रोत ढूंढना आदि फडनवीस के कार्य थे राजस्व प्रशासन व्यवस्था में सभी प्रकार के व्ययों का ब्यौरा सीधे दीवान के पास भेजा जाता था फडनवीस के कार्यालय में प्रशासन के विभिन्न विभागों के आलेख सुरक्षित रखे जाते थे। यही पर राजस्व और व्यय सम्बन्धी मामलों को निबटाया जाता था।

सिंधिया राजस्व व्यवस्था में निम्नलिखित प्रकार से व्यय करते थे वे साढ़े आठ प्रतिशत दान में पचास प्रतिशत सेना में तथा साढ़े आठ प्रतिशत जनहित पर तथा साढ़े आठ प्रतिशत निजी कोष में जमा करते

थे, छः प्रतिशत राजा द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध करने के लिए खर्च होते थे।

ग्वालियर राज्य में प्रशासन का दूसरा भाग प्रान्तीय तथा जिला प्रशासन था। मामलतदार पर मण्डल, जिले, सरकार सूवा इत्यादि कार्यभार होता था वे सभी कार्यो की देखभाल जैसे खेती का विकास, दीवानी, फौजदारी न्याय, नागरिक सेना पुलिस तथा सामाजिक एवं धार्मिक झगड़ों की विवेचना आदि प्रशासन में भ्रष्टाचार रोकने का कार्य देशमुख नामक अधिकारी करते थे, वे महल के मुख्य कार्यकर्ता की सहायता करते थे। तीसरे भाग में ग्राम प्रशासन आता था ग्राम का मुख्य अधिकारी मुखिया था जो कर सम्बन्धी न्यायिक तथा अन्य प्रशासनिक कार्य करता था। वह ग्राम तथा राज्य प्रशासन के मध्य का मध्यस्थ होता था पटेल या मुखिया के अधीन ग्राम लिपिक होता था जो ग्राम की भूमिका लेखा जोखा तैयार करता था कोतवाल नगर का मुख्य शासक होता था वह नगर का मुख्य दण्ड अधिकारी और पुलिस का मुखिया होता था।

निष्कर्ष :–

सिंधिया परिवार द्वारा अनेक ट्रस्ट जिनके माध्यम से सेवा के तमाम कार्यों को किया जाता है, जिनमें से प्रमुख हैं– सिंधिया चेरिटेबल पब्लिक ट्रस्ट, सिंधिया देवस्थान चेरिटेबल ट्रस्ट अम्मा महाराज छत्री ट्रस्ट, महाराज सर जीवाजीराव ट्रस्ट बाम्बे सिंधिया रूरल डेवलपमेण्ट ट्रस्ट एवं बेल फेयर ट्रस्ट ग्वालियर, संख्या राजे सदा वर्त धर्मशाला ट्रस्ट उज्जैन, श्री कृष्ण माधव ट्रस्ट बाम्बे, समुद्र महल ट्रस्ट बाम्बे आदि शैक्षणिक एवं खेल संस्थाओं के बोर्ड ऑफ गर्वनेस ज्योतिरादित्य सिंधिया है तथा कई संस्थाओं के बोर्ड ऑफ गवर्नस हैं।

सिंधिया काल में महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम थीं, तथा वे खेती व अन्य व्यवसायों में भी भागीदार थी तथा उन्हें परिवार की धन सम्पदा में भी हिस्सा मिलता था। इस प्रकार पूर्ण अधिकार न होते हुए भी दतिया रियासत के मुकाबले ज्यादा अधिकार प्राप्त होते थे।

सन्दर्भ सूची :–

1. *एडमिनिस्टेशन ऑफ द ग्वालियर स्टेट – अलीजाह दरबार प्रेस, सन् 1907, 1910–11, 1916, 1932–33।*
2. *मिश्रा, डॉ आनन्द, (1996) – ग्वालियर राज्य के राजपूत जागीरदार भारतीय इतिहास समिति मध्यभारत भोपाल, ग्वालियर राज्य का आर्थिक इतिहास आदि का प्रकाशन भोपाल।*
3. *तिवारी, डॉ. प्रत्युश कुमार, (2011) – धार्मिक समन्वय में बुन्देला शासकों का योगदान।*
4. *तिवारी, डॉ. सरिता – ग्वालियर के सिंधिया शासकों का राजस्व प्रशासन।*
5. *निरंजन, डॉ. अवधेश कुमार–सिंधिया शासकों की धार्मिक नीति का आलोचनात्क अध्ययन।*

****